भारत का टी. बी. प्रोग्राम ; सप्ताह में दवा की केवल तीन खुराके ं देना – सही या गलत ?

साराँश

पृष्ठभूमि : शताब्दियों तक टी.बी. (तपेदिक या क्षयरोग) एक लाइलाज बीमारी थी । करीब 50–60 वर्ष पूर्व इसके इलाज की खोज हुई – 'रोजाना खिलाई जाने वाली पांच दवाए' जो कि मानव जाति के लिए एक चमत्कार सिद्ध हुई।

बाद में, कुछ अध्ययनों में दावा किया गया कि इन्हीं पांच दवाओं को यदि (रोजाना की बजाय) सप्ताह में केवल तीन बार ही खिलाया जाये तो भी ये बढ़िया असर करती हैं । लेकिन दुनिया के ज्यादातर वैज्ञानिक/डॉक्टर/अध्ययन इससे सहमत न दिखे । जिसके चलते टी. बी. से अधिक पीड़ित 22 में से 20 देशो में आज भी रोजाना दवा खिलाने का चलन निरन्तर जारी है ।

भारत एक अपवाद : 1998 मे भारत ने 'सप्ताह मे तीन खुराक' वाली प्रणाली को अपना लिया। अब तक राष्ट्रीय अभियान (डॉट्स) के तहत करीब ड़ेढ़ करोड़ टी. बी. रोगियों का इलाज सप्ताह में तीन बार दवा खिलाकर किया जा चुका हैं तथा ये सिलसिला आज भी जारी है ।

अध्ययन का उद्देश्य : यह सुनिश्चित करना कि 'सप्ताह में तीन खुराक' वाली इस प्रणाली से मरीज को क्या वाकई में स्थाई स्वास्थ्य लाभ मिलता रहा है ? ऐसे मरीज की पहचान करना जो एक बार ऐसा इलाज कराने के बाद भी दुबारा पंजीकृत हुआ यानि उसको दूसरी पारी भी लेनी पड़ी । ऐसे पुनरावृति वाले मरीजों को चुन–चुन कर उनकी सूची तैयार की गई। इस कार्य में 6 साल लगे ।

कर्मक्षेत्र : भारत का फरीदाबाद जिला तपेदिक केन्द्र, जहाँ लेखक पिछले 6 साल से बतौर टी.बी. चिकित्सक नियुक्त है, तथा उसे हजारों नए–पुराने टी.बी. रोगियों पर नजर रखनी पड़ती है, जो 'सप्ताह में तीन दिन' वाला सरकारी इलाज ले रहे हैं ।

डाटा संग्रहण की पद्वति :

1. **पुराने टी. बी. के खातों का अध्ययन :** लेखक ने जिले के सभी टी.बी. कर्मचारियों को प्रेरित किया । सबने मिलकर पिछले 15 सालों के हाथ से लिखे रजिस्ट्रों को एक–एक कर खंगाला तथा धीरे–धीरे ऐसे 1575 मरीजों को ढूँढ निकाला, जिनका नाम राष्ट्रीय पंजीयन पुस्तिका में एक से ज्यादा बार दर्ज पाया गया ।
2. लेखक ने ओ.पी.डी. में रोजाना आने जाने वाले हर ऐसे मरीज को पकड़ा, जो डाट्स के इलाज के लिए दूसरी बार पहुँचा था । औसतन दूसरी पारी वाला ऐसा एक मरीज प्रतिदिन पहचाना जा सका। बूंद – बूंद से घड़ा भरता गया। 6 सालों मे 3100 एसे` मरीज मिल पाये। इनमें से करीब आधे तो दिल्ली तथा फरीदाबाद के नामी गरामी अस्पतालों से टी. बी. की बीमारी की सटीक पहचान करवाकर केवल पुनः पंजीकरण के लिए पहुँचे थे।

परिणाम : सप्ताह में तीन खुराक वाली पद्वति द्वारा इलाज कराये हुए कुल 36,785 मरीजों की जीवनी तथा 15 सालो के टी.बी. खातों के गहन अनुसंधान में कुल 4675 मरीज ऐसे पाये गये, जो मुड़–मुड़कर बीमार हालत में इलाज के लिए वापस आते गए । एसे` पुनरावृति वाले मरीजों की संख्या **12.7%** पाई गई । इन सबके केवल नाम एवम् पते ही नहीं बल्कि सरकार द्वारा चिन्हित विषेश पहचान संख्या (यू.आई.डी.) भी ढूँढ निकाले गए तथा एक्सेल व साफ्ट वेयर मे रोजाना दर्ज किये गये जो कि सबसे पक्का सबतू होता है। इसके अलावा **1590 (4.9%)** मरीज मर गये तथा **2590 (8.0%)** मरीजों ने इलाज अधूरा छोड़ा ।

यह अध्ययन एक छुपी हुई भारी कमी को उजागर करता है । राष्ट्रीय अभियान के बहुचर्चित 85 प्रतिषत सफलता के सरकारी आँकड़े किसी फूले हुए गुब्बारे के समान है । **निष्कर्श :** राष्ट्रीय अभियान के तहत सप्ताह में तीन बार दवा खिलाने की प्रणाली **मरीजों को लम्बे समय के लिए स्वस्थ करने में फेल साबित हुई है।** दवा की खुराके घटाने से मानो चमत्कारिक इलाज की आत्मा ही निकल गई हो । इलाज के बावजूद मरीज मुड़–मुड़ कर, बीमार हो कर वापस आ रहे हैं । जो कि भारी मात्रा में मल्टी ड्रग रेसिस्टेंस (एम.डी.आर.) तपेदिक के चलन को पैदा

कर रहे हैं । दुनिया के टी. बी. के मरीजों के बोझ का पाँचवा भाग भारत वहन करता है। अतः लाइलाज टी. बी. का यह नया मंडराता हुआ खतरा केवल भारत ही नही बल्कि समस्त मानव जाति के लिए एक अभीशाप हो सकता है।

डा0. रमन कक्कड़ फरीदाबाद